# ❍ 03 / 10 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
## ⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *आप समान बनाने की सेवा की ?*

➢➢ *ज्ञान योग में स्वयं को तीखा बनाया ?*

➢➢ *ड्रामा में समस्याओं को खेल समझ एक्यूरेट पार्ट बजाया ?*

➢➢ *सदा प्रसान रह प्रशंसा के पात्र बने ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ कर्मातीत बनने के लिए कर्मों के हिसाब-किताब से मुक्त बनो। सेवा में भी सेवा के बंधन में बंधने वाले सेवाधारी नहीं। बन्धनमुक्त बन सेवा करो अर्थात् हद की रायॅल इच्छाओं से मुक्त बनो। *जैसे देह का बन्धन, देह के सम्बन्ध का बन्धन, ऐसे सेवा में स्वार्थ-यह भी बन्धन कर्मातीत बनने में विघ्न डालता है। कर्मातीत बनना अर्थात् इस रॉयल हिसाब-किताब से भी मुक्त।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं महावीर आत्मा हूँ"*

〰✧ सदैव अपने को महावीर अर्थात् महान् आत्मा अनुभव करते हो? *महान् आत्मा सदा जो संकल्प करेंगे, बोल बोलेंगे वो साधारण नहीं होगा, महान् होगा। क्योंकि ऊंचे-ते-ऊंचे बाप के बच्चे भी ऊंचे, महान् हुए ना।* जैसे कोई आजकल की दुनिया में वी.आई.पी. का बच्चा होगा तो वह अपने को भी वी.आई.पी. समझेगा ना। तो आप से ऊंचा तो कोई है ही नहीं।

〰✧ *तो ऐसे, ऊंचे-ते-ऊंचे बाप की सन्तान ऊंचे-ते-ऊंची आत्मायें हैं-यह स्मृति सदा शक्तिशाली बनाती है। ऊंचा बाप, ऊंचे हम, ऊंचा कार्य-ऐसी स्मृति में रहने वाले सदा बाप समान बन जाते हैं। तो बाप समान बने हो? बाप हर बच्चे को ऊंचा ही बनाते हैं। कोई ऊंचा, कोई नीचा नहीं, सब ऊंचे-ते-ऊंचे।* अगर अपनी कमजोरी से कोई नीचे की स्थिति में रहता है तो उसकी कमजोरी है। बाकी बाप सबको ऊंचा बनाता है। सारे विश्व के आगे श्रेष्ठ और ऊंची आत्मायें आपके सिवाए कोई नहीं हैं, इसलिए तो आप आत्माओंका ही गायन और पूजन होता है।

〰✧ अभी तक गायन, पूजन हो रहा है। कभी भी कोई मन्दिर में जायेंगे तो क्या समझेंगे? कोई भी मन्दिर में मूर्ति देखकर क्या समझते हो? यह हमारी ही मूर्ति है। सिर्फ बाप नहीं पूजा जाता, बाप के साथ आप भी पूजे जाते हो। ऐसे महान बन गये! एक बार नहीं, अनेक बार बने हैं-जहाँ यह नशा होगा वहाँ माया

की आकर्षण अपने तरफ आकर्षित नहीं कर सकेगी, सदा न्यारे होंगे। सभी अपने आप से सन्तुष्ट हो? *जैसे बाप सुनाते हैं, वैसे ही अनुभव करते हुए आगे बढ़ना-यह है अपने आप से सन्तुष्ट रहना। 'ऊंचे-ते-ऊंचे'-यही विशेष बरदान याद रखना। याद करना सहज है या मुश्किल लगता है? सहज स्मृति स्वत: आती रहेगी। माया कहाँ रोक नहीं सकेगी, सदा आगे बढ़ते रहेंगे।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∫∫ 3 ∫∫ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ आज बच्चों के स्नेही बापदादा हर एक बच्चे को विशेष दो बातों में चेक कर रहे थे। स्नेह का प्रत्यक्ष स्वरूप बच्चों को सम्पन और सम्पूर्ण बनाना है। हर एक में *रूलिंग पॉवर और कन्ट्रोलिंग पॉवर कहाँ तक आई है - आज यह देख रहे थे।*

〰✧ जैसे आत्मा की स्थूल कर्मेन्द्रियाँ आत्मा के कन्ट्रोल से चलती है, जब चाहे, जैसे चाहे और जहाँ चाहे वैसे चला सकते हैं और चलाते रहते हैं। कन्ट्रोलिंग पॉवर भी है। जैसे हाथ-पाँव स्थूल शक्तियाँ हैं ऐसे *मन-बुद्धि-संस्कार आत्मा की सूक्ष्म शक्तियाँ हैं।*

〰✧ सक्ष्म शक्तियों के ऊपर कन्टोल करने की पॉवर अर्थात मन-बदिध को.

संस्कारों को जब चाहें, जहाँ चाहे, जैसे चाहे, जितना समय चाहे - ऐसे कन्ट्रोलिंग पॉवर, रूलिंग पॉवर आई है? क्योंकि इस ब्राह्मण जीवन में मास्टर आलमाइटी अर्थार्टी बनते हो। *इस समय की प्राप्ति सारा कल्प - राज्य रूप और पुजारी के रूप में चलती रहती है।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

────────────────────────

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ मन के मालिक हो ना! तो सेकण्ड में स्टॉप, तो स्टॉप हो जाए। *ऐसा नहीं आप कहो स्टॉप और मन चलता रहे, इससे सिद्ध है कि मालिकपन की शक्ति कम है। अगर मालिक शक्तिशाली है तो मालिक के डायरेक्शन बिना मन एक संकल्प भी नहीं कर सकता।* स्टॉप, तो स्टॉप। चलो, तो चले। जहाँ चलाने चाहो वहाँ चले। *ऐसे नहीं कि मन को बहुत समय की व्यर्थ तरफ चलने की आदत है, तो आप चलाओ शुद्ध संकल्प की तरफ और मन जाये व्यर्थ की तरफ। तो यह मालिक को मालिकपन में चलाना नहीं आता।* यह अभ्यास करो। चेक करो स्टॉप कहने से, स्टॉप होता है? या कुछ चलकर फिर स्टॉप होता है? *अगर गाड़ी में ब्रेक लगानी हो लेकिन कुछ समय चलकर फिर ब्रेक लगे, तो वह गाड़ी काम की है? ड्राइव करने वाला योग्य है कि एक्सीडेंट करने वाला है? ब्रेक, तो फौरन सेकण्ड में ब्रेक लगनी चाहिए। यही अभ्यास कर्मातीत अवस्था के समीप लायेगा।* संकल्प करने के कर्म में भी फुल पास। कर्मातीत का अर्थ ही है हर सबजेक्ट में फुल पास।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

————————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
( आज की मुरली के सार पर आधारित... )

✺ *"ड्रिल :- रूहानी यौद्वे बन ज्ञान गोलों,से माया दुश्मन पर जीत पाना"*

➳ _ ➳ जीवन में भगवान की प्रवेशता से कितना प्यारा जादु छा गया है... यही सोचते हुए मै आत्मा... मीठे बाबा की कुटिया की तरफ कदम बढ़ाती हूँ... मीठे बाबा के अमूल्य ज्ञान धन सम्पद्दा को पाकर मै आत्मा... कितनी मालामाल हो गयी हूँ... *मेरा जीवन मूल्यों से सज संवर कर. कितना शक्तिशाली हो गया है.*.. देहभान से घिरी हुई मै आत्मा यूँ रूहानियत से खिल जाउंगी यह मेने कब सोचा था... और मेरे सारे दुःख पलभर में अथाह सुखो में तब्दील हो जायेंगे... *आज यह जीवन कदम कदम पर विजय श्री से सजा है... और में आत्मा भगवान की बाँहों में मुस्करा रही हूँ..*.

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को ज्ञान रत्नों से आबाद करते हुए कहा :-* " मीठे प्यारे फूल बच्चे... मीठे बाबा ने जो अथाह रत्नों से दामन को सजाया है...इन ज्ञान रत्नों के मनन से शक्तिशाली बनकर... विकारो से मुक्त होकर, सदा के विजयी बन विश्वधरा पर मुस्कराओ... *ज्ञान की अमूल्य धरोहर को दिल में समाये, और यादो में गहरे डूबकर, माया पर सहज ही जीत पा लो.*.."

➳ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से सारे ज्ञान गोले अपने मनबदिध रुपी तोप

में भरकर कहती हूँ ;-* "मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा आपके बिना इस कुरुक्षेत्र पर कितनी अकेली और असहाय थी... विकारो से जूझ रही थी और हारती ही जा रही थी... *आपने मुझे मेरा वास्तविक रूप याद दिलाकर, मुझे अपनी शक्तियो से सजाकर, शक्तिशाली बना दिया है.*.. और मै आत्मा विकारो पर जीतकर मुस्करा रही हूँ..."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को ज्ञान के असीम खजानो से मालामाल करते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वरीय यादो में दिल की गहराइयो से समाकर... अपनी खोयी चमक को पुनः पा लो... *ईश्वर पिता ने जो ज्ञान के तीक्ष्ण तीर, बुद्धि रुपी हाथो में थमाए है.. उससे माया को सहज ही परास्त कर... सतयुगी असीम सुखो की धरा पर मौज मनाओ..*.

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा की अथाह धन सम्पत्ति की मालिक बनकर कहती हूँ :-* "प्यारे प्यारे बाबा मेरे... *आपने मेरे जीवन में आकर, मुझ आत्मा का खोया सम्मान पुनः वापिस दिलवाया हे.*.. इस युद्व में मै आत्मा जनमो से हारती आयी... और आज आपने संगम के वरदानी युग में मेरा साथ देकर, मुझे अपनी बाँहों में भरकर, विजयी श्री दिलवाई है..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को देह भान और विकारो से छुड़ाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... ईश्वरीय यादो के सहारे रूहानी यौद्वे बनकर, ज्ञान के गोलों से माया दुश्मन को परास्त कर... सच्ची खुशियो में आनन्द भरे गीत गाओ... *ईश्वरीय ज्ञान और यादो की दौलत ही माया के चंगुल से छुड़ाकर... विश्व महाराजन सा सजाएगी.*.."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा से सारे खजाने लेकर, बुद्धि को अमीरी से भरते हुए कहती हूँ ;-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... मै आत्मा सदा अज्ञान अंधेरो में भटक कर... देहभान में लटक कर बेहोश थी... *आज आपने मुझे यादो और ज्ञान की ताकत देकर पुनः सुरजीत सा किया है.*.. मीठे बाबा मै आत्मा आपकी मदद पाकर माया दुश्मन को हराकर,पुनः विजयी बन गयी हूँ..."मीठे बाबा को दिल से शुक्रिया कर मै आत्मा... अपने कर्मक्षेत्र पर आ गयी...

_____

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
( आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित... )

✺ *"ड्रिल :- ब्रह्मा बाप की दिल पर चढ़ने के लिए ज्ञान योग में तीखा बनना है*"

➳ _ ➳ मम्मा बाबा ने शिव बाबा की श्रेष्ठ मत पर चल कर जो श्रेष्ठ कर्म किये उन श्रेष्ठ कर्मो का एक एक यादगार उनकी कर्मभूमि मधुबन में स्पष्ट दिखाई देता है। इसलिए मम्मा बाबा को फॉलो करने का दृढ़ संकल्प लेते ही मन बुद्धि सहज ही परमात्मा की उस अवतरण भूमि मधुबन में पहुंच जाते हैं और मम्मा बाबा की साकार यादें बुद्धि में सहज ही स्पष्ट हो जाती हैं। *ऐसे ही मम्मा बाबा की साकार यादों का अनुभव करते करते मैं मन बुद्धि से पहुंच जाती हूँ उस स्थान पर जहां मम्मा बाबा ज्ञान योग से अपने हर ब्राह्मण बच्चे की पालना करते थे*।

➳ _ ➳ मैं देख रही हूं स्वयं को उस क्लासरूम में जहां मम्मा बाबा आ कर मुरली चलाते थे। मम्मा बाबा के ममतामई, स्नेही और मधुर महावाक्यों को सुनने के लिए अनेक ब्राह्मण आत्मायें यहां उपस्थित हैं। *सामने संदली पर ममता की साक्षात मूर्त मम्मा और प्रेम तथा वात्सलय की प्रतिमूर्ति ब्रह्मा बाबा विराजमान है। दोनों के चेहरे पर दिव्य नूर और दृष्टि में रूहानी कशिश सबको अपनी ओर आकर्षित कर रही है*। मुख से ओम ध्वनि का उच्चारण करती, सितार पर बड़ी तन्मयता के साथ दिव्य गीत गाती मम्मा की मधुर आवाज सुनने वाली हर ब्राह्मण आत्मा के हृदय के तारों को झंकारित कर रही है।

➳ _ ➳ ऐसा लग रहा है जैसे सभी ब्राह्मण आत्मायें देह से ऊपर उठ कर मुक्त पंछी के समान रूहानियत के आकाश में विचरण कर रही हैं। *मम्मा बाबा के मुख से मधुर वाणी सुनने के बाद अब एक एक करके सभी ब्राह्मण बच्चे मम्मा बाबा की ममतामयी गोद में बैठ अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर रहें हैं*। मम्मा बाबा ज्ञान की लोरी दे कर सबको अपने वात्सलय का अनुभव करवा

रहें हैं। मेरी बारी आने पर मैं जैसे ही मम्मा बाबा की गोद मे बैठती हूँ *ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे शरीर है ही नही बस थोड़ी चेतनता है किंतु अहसास नही है कि शरीर कहाँ है*। बहुत ही हल्केपन और स्वयं को असीम शक्ति से मैं भरपूर अनुभव कर रही हूं।

➳ _ ➳ मुरली क्लास के बाद अब मम्मा बाबा सभी बच्चों को सैर पर ले जा रहें हैं। ब्रह्मा बाबा चलते चलते बीच बीच मे खड़े हो कर बच्चों से पूछ रहे हैं:- " शिव बाबा याद है"। सभी बच्चे बारी बारी से बाबा का हाथ पकड़ कर खुशी से सैर कर रहें हैं। खुली जगह पर बैठ सभी चाय पी रहें हैं। *बीच बीच मे बाबा ज्ञान की बातें बच्चों को समझा रहें हैं और ज्ञान सुनाते सुनाते कभी अपने अनादि स्वरूप में तो कभी अपने आदि स्वरूप में स्थित होने ड्रिल भी करवा रहें हैं*। मैं देख रही हूं ड्रिल करते करते कई ब्राह्मण आत्मायें ट्रांस में पहुंच कर बाबा को श्रीकृष्ण के बाल रूप में देख गोपी बन उनके साथ रास करने में खोई हुई हैं।

➳ _ ➳ साकार मम्मा बाबा के साथ के इन अनमोल क्षणों का भरपूर आनन्द ले कर अब मैं ब्राह्मण आत्मा अपने सेवा स्थल पर लौट रही हूँ। *मन मे अब केवल एक ही संकल्प है मात पिता को फॉलो कर, मम्मा बाबा के समान सबकी ज्ञान योग से पालना कर सबको आप समान बनाना*। इस संकल्प को पूरा करने के लिए अब मैं अपने हर संकल्प, बोल और कर्म पर विशेष अटेंशन दे कर हर कर्म करने से पहले चेक कर रही हूं कि क्या वो मम्मा बाबा के समान है। मम्मा बाबा की शिक्षाओं को जीवन मे धारण कर सम्पूर्णता के लक्ष्य को पाने का तीव्र पुरुषार्थ करते हुए अब मैं *मम्मा बाबा के समान स्नेह और शक्तिरूप बन ईश्वरीय यज्ञ में अपने तन-मन-धन को सफल कर रही हूं*।

---

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
( आज की मुरली के वरदान पर आधारित... )

✺ *मैं ड्रामा में समस्याओं को खेल समझ एक्यरेट पार्ट बजाने वाली आत्मा

हूँ।*
✺ *मैं हीरो पार्टधारी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
( आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित... )

✺ *मैं आत्मा सदा प्रसन्न रहती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा प्रशन्सा की पात्र हूँ ।*
✺ *मैं प्रसन्नचित्त आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
( अव्यक्त मुरलियों पर आधारित... )

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ कोई कैसा भी हो उनके साथ चलने की विधि सीखो। कोई क्या भी करता हो, बार-बार विघ्न रूप बन सामने आता हो लेकिन यह विघ्नों में समय लगाना, आखिर यह भी कब तक? इसका भी समाप्ति समारोह तो होना है ना? तो *दूसरे को नहीं देखना। यह ऐसे करता है, मुझे क्या करना है? अगर वह पहाड़ है तो मुझे किनारा करना है, पहाड़ नहीं हटना है। यह बदले तो हम बदलें - यह है पहाड़ हटे तो मैं आगे बढ़ूं। न पहाड़ हटेगा न आप मंजिल पर पहुंच सकेंगे। इसलिए अगर उस आत्मा के प्रति शुभ भावना है, तो इशारा दिया

और मन-बुद्धि से खाली।* खुद अपने को उस विघ्न स्वरूप बनने वाले के सोच-विचार में नहीं डालो। जब नम्बरवार हैं तो नम्बरवार में स्टेज भी नम्बरवार होनी ही है लेकिन हमको नम्बरवन बनना है।

➳ _ ➳ ऐसे विघ्न वा व्यर्थ संकल्प चलाने वाली आत्माओं के प्रति स्वयं परिवर्तन होकर उनके प्रति शुभ भावना रखते चलो। टाइम थोड़ा लगता है, मेहनत थोड़ी लगती है लेकिन *आखिर जो स्व-परिवर्तन करता है, विजय की माला उसी के गले में पड़ती है। शुभ भावना से अगर उसको परिवर्तन कर सकते हो तो करो, नहीं तो इशारा दो, अपनी रेसपान्सिबिल्टी खत्म कर दो और स्व परिवर्तन कर आगे उड़ते चलो*। यह विघ्न रूप भी सोने का लगाव का धागा है। यह भी उड़ने नहीं देगा। यह बहुत महीन और बहुत सत्यता के पर्दे का धागा है। यही सोचते हैं यह तो सच्ची बात है ना। यह तो होता है ना। यह तो होना नहीं चाहिए ना। *लेकिन कब तक देखते, कब तक रुकते रहेंगे? अब तो स्वयं को महीन धागों से भी मुक्त करो। मुक्ति वर्ष मनाओ।*

✺ *ड्रिल :- "विघ्न-विनाशक बन महीन धागों से मुक्त होने का अनुभव"*

➳ _ ➳ अमृतवेला के सुंदर सुहावने समय में मैं आत्मा मीठे बाबा की याद में बैठी हुई हूँ... *मेरा मन अपने श्रेष्ठ भाग्य के नशे में झूम रहा है... कितनी खुशकिस्मत आत्मा हूँ मैं... स्वयं भगवान ने मुझे अपना बना लिया है... मेरे प्यारे बाबा ने मुझे स्वयं की सत्य पहचान दी...* मेरे 84 जन्मों के चक्र के बारे में बताया... सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग में अनेक जन्म लेते लेते... अब मैं आत्मा कल्प के इस अंतिम पड़ाव पर आ गई हूँ... इस बेहद सुंदर, कल्याणकारी संगम के समय में... मेरे मीठे शिवबाबा मेरे साथी बन गए हैं...

➳ _ ➳ बाबा से अविरल स्नेह की धारा मुझ आत्मा पर पड़ रही है... मीठे बाबा अपनी स्नेहिल दृष्टि से मुझे निहाल कर रहे हैं... उनकी भृकुटी से, नयनों से दिव्य तेज निकलकर मुझमें समाता जा रहा है... मैं आत्मा सशक्त बनती जा रही हूँ... मैं चिंतन कर रही हूँ कि... कितना सुंदर भाग्य है मेरा स्वयं भगवान ने मुझे अपना बना लिया है... सारा संसार जिसकी एक झलक पाने के लिए तरस रहा है उससे मैं सम्मुख मिलन मना रही हूँ... *परमात्म मिलन और

ईश्वरीय प्राप्तियों की चंद ही घड़ियाँ शेष रही हैं... इस बात को मैं आत्मा गहराई से स्वयं में समाती जा रही हूँ...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा संगम के अपने एक-एक पल को सफल कर रही हूँ... भिन्न-भिन्न स्वभाव संस्कार वाली आत्माओं से संस्कार मिलन की रास मना रही हूँ... कैसी भी आत्मा हो, कोई कुछ भी करता रहे... मैं आत्मा सभी के प्रति शुभ भावना ही रखती हूँ... *संस्कारों के टकराव में, विघ्नों में अपने अमूल्य समय को न गंवा कर... मैं ईश्वरीय फ़खुर में झूम रही हूँ... दूसरों के पार्ट पर ध्यान देने की बजाय मैं स्वचिंतन और स्व-परिवर्तन पर ध्यान दे रही हूँ...*

➳ _ ➳ विघ्न रूपी पहाड़ों से टकराने में समय और शक्तियों को व्यर्थ ना करके... मैं किनारा करती जा रही हूँ... विघ्न रूपी पहाड़ हटे तो मैं मंजिल पर पहुँचूँ, इन कपोल कल्पना में एक पल भी ना गंवा कर... हर आत्मा के प्रति कल्याण की भावना ही रख रही हूँ... मेरे बाबा मुझे राजा बच्चा देखना चाहते हैं... तो जैसा लक्ष्य उसी अनुसार मैं लक्षण धारण कर रही हूँ... *कोई भी आत्मा जो विघ्न डालने या व्यर्थ संकल्प चलाने के निमित्त बनती है उनके प्रति भी मेरे मन में कल्याण की ही भावना है... मैं स्वयं को मोल्ड करती जा रही हूँ... क्योंकि स्व परिवर्तन करने वालों की विजय निश्चित होनी ही है...*

➳ _ ➳ शुभ भावना, श्रेष्ठ भावना रख उस आत्मा को इशारा देकर आगे बढ़ रही हूँ... *स्व परिवर्तन द्वारा उड़ती कला के लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रही हूँ... ये विघ्न सोने के लगाव के धागों के जैसे हैं...* बहुत ही महीन धागे हैं ये... जो पुरुषार्थ में उड़ान भरने नहीं देते... बाबा के साथ और सहयोग से मैं आत्मा स्वयं को इन महीन धागों से मुक्त, स्वतंत्र करती जा रही हूँ... समय अब अपनी अंतिम घड़ियां गिन रहा है, ऐसे में *मैं आत्मा... प्यारे बाबा के इशारे समझकर विघ्न विनाशक बन हर प्रकार के महीन धागों से मुक्त हो रही हूँ... संपन्नता की अपनी मंजिल की ओर बढ़ती जा रही हूँ...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔